ग्रामोदय विश्वविद्यालय में हुआ 'शबरी के राम' का भव्य एवं भावपूर्ण मंचन

नवभारत न्यूज

चित्रकूट, 17 जून । महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के वाल्मीकि सभागार में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी), नई दिल्ली एवं इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित चिल्ड्रन थिएटर वर्कशॉप-2026 के समापन अवसर पर बाल रंगमंचीय नाटक 'शबरी के राम' का भव्य एवं मनोहारी मंचन किया गया। बाल कलाकारों की उत्कृष्ट प्रस्तुति ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया तथा उपस्थित जनों ने कार्यक्रम की मुक्त कंठ से सराहना की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सतना सांसद गणेश सिंह थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतेन्दु नाट्य अकादमी के अध्यक्ष रति शंकर त्रिपाठी ने की। कार्यशाला का निर्देशन सुप्रसिद्ध रंगकर्मी मुस्कान गोस्वामी ने किया। मुख्य अतिथि गणेश सिंह ने बाल कलाकारों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि माता शबरी और प्रभु श्रीराम का प्रसंग चित्रकूट वनांचल की सांस्कृतिक एवं भावनात्मक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने कहा कि अयोध्या आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु चित्रकूट की पावन भूमि पर भी आना चाहता है, क्योंकि भगवान श्रीराम के वनवास काल का महत्वपूर्ण हिस्सा चित्रकूट से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राम वन पथ के विकास का कार्य प्रारंभ हो चुका है, जो भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने चित्रकूट की 84 कोसी परिक्रमा क्षेत्र में स्थित संत-महात्माओं की तपोभूमियों, साधना स्थलों एवं सांस्कृतिक धरोहरों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने

की आवश्यकता पर बल देते हुए संस्कृति मंत्रालय से ऐसे स्थलों के चिन्हांकन एवं विकास की अपेक्षा व्यक्त की। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शासन स्तर पर एक उच्चस्तरीय समिति के गठन का सुझाव भी दिया।

अपने उद्बोधन में श्री सिंह ने कहा कि भारत ऋषि-मुनियों, गुरु-शिष्य परंपरा और ज्ञान की संस्कृति का देश है। चित्रकूट वह पुण्यभूमि है जहाँ भगवान श्रीराम ने अपने वनवास काल का लंबा समय व्यतीत किया और यहाँ की कण-कण में राम का वास है। उन्होंने नानाजी देशमुख की जयंती पर प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम का उल्लेख करते हुए चित्रकूट को भारतीय संस्कृति, ग्रामोदय और लोकजीवन के पुनर्जागरण का प्रेरणास्थल बताया।

विशिष्ट अतिथि कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे ने कहा कि मानव जीवन में संवेदनाओं का विशेष महत्व है। इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजन विद्यार्थियों की आंतरिक संवेदनाओं, रचनात्मकता और अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करते हैं। उन्होंने कहा कि संवेदनशीलता ही मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है तथा शिक्षा के साथ कला और संस्कृति का समन्वय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की टीम को विश्वविद्यालय के आगामी दीक्षांत समारोह में प्रस्तुति हेतु आमंत्रित भी किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में भारतेन्दु नाट्य अकादमी के अध्यक्ष रति शंकर त्रिपाठी ने कहा कि रंगमंच केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति को जोड़ने वाला सशक्त उपकरण है। उन्होंने बाल कलाकारों के उत्कृष्ट अभिनय और कार्यशाला की उपलब्धियों की सराहना की।

कार्यशाला निदेशक मुस्कान गोस्वामी ने कहा कि चित्रकूट जैसी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक भूमि पर आयोजित यह कार्यशाला बच्चों के लिए सीखने और आत्म-अभिव्यक्ति का अनूठा अवसर रही। उन्होंने बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य केवल एक नाट्य प्रस्तुति तैयार करना नहीं, बल्कि 'थिएटर इन एजुकेशन' की अवधारणा के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन, टीम भावना और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करना था।

उन्होंने कहा कि 'शबरी के राम' माता शबरी के निष्कलंक प्रेम, अटूट श्रद्धा, समर्पण और धैर्य की कथा है, जो यह संदेश देती है कि सच्ची भक्ति किसी जाति, वर्ग या भेदभाव की मोहताज नहीं होती। यह प्रस्तुति प्रेम, करुणा, आस्था और मानवीय मूल्यों का उत्सव है तथा भारतीय संस्कृति की सुंदरता को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रभावी प्रयास है। कार्यशाला के दौरान बच्चों को अभिनय, संगीत, गायन, नृत्य, वाणी एवं भाषण कला, मंच सज्जा, व्यक्तित्व विकास, टीमवर्क और रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिवार के पदाधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक तथा बड़ी संख्या में कला प्रेमी उपस्थित रहे।

नाम का लाभ उठा कर बिना नियुक्ति पत्र के 10 साल से 'गुरु जी' कर रहे नौकरी

रमेश जायसवाल पिता रामचरण जयसवाल निवासी गैलहरी फर्जी ईजीएस गुरुजी गुरजनह भरतपुर के नाम पर नियुक्ति दो रमेश नामों का खेल पर नियुक्ति

रमेश जायसवाल पिता जगदीश जयसवाल निवासी गुरजनह ग्राम

नवभारत न्यूज

रामनगर 17 जून । मैहर जिले के विकाश खण्ड क्षेत्र रामनगर के पीएम श्री कन्या संकुल अन्तर्गत मध्यप्रदेश शिक्षा गारंटी योजना ईजीएस गुरुजी में बिना नियुक्ति पत्र आदेश के रमेश जायसवाल पिता रामचरण जयसवाल निवासी गैलहरी फर्जी तरीके से रमेश जायसवाल पिता जगदीश जयसवाल गुरजहन ग्राम पंचायत भरतपुर के नाम पर नौकरी कर रहा।

जब की कार्यालय समन्वयक सर्वशिक्षा अभियान जनपद शिक्षा केन्द्र रामनगर जिला सतना द्वारा प्रशिक्षण के लिए पत्र क्रमांक 286 दिनांक 27-10-2004 को जारी पत्र रमेश जयसवाल गुरजनह ग्राम पंचायत भरतपुर के नाम जारी था ।जहां प्रशिक्षण के लिए रमेश जायसवाल पिता रामचरण जयसवाल निवासी गैलहरी फर्जी तरीके से प्रशिक्षण नामों के खेल पर बिना नियुक्ति पत्र के नौकरी कर रहा। ईजीएस गुरुजी की भर्ती ग्राम पंचायत पर पारित प्रस्ताव अध्यक्ष पालक शिक्षक संघ के आधार होती थी। जिसके लिए ग्राम पंचायत का निवासी होना मूल रूप से अति आवश्यक था। तथा आदिवासी बच्चों के लिए पहली प्राथमिकता पर आदिवासी शिक्षक का होना अनिवार्य था आदिवासी शिक्षक ना मिलने पर जाति संवर्ग के आधार पर नियुक्ति किया जाना था। रमेश जायसवाल की फर्जी अवैध भर्ती की पुष्टि उनकी दो सगी भाभी ईजीएस गुरुजी पर गैलहरी केन्द्र क्रमांक 01 पर कुसुम जयसवाल,, तथा गैलहरी केन्द्र क्रमांक 02 पर कमला जयसवाल की नियुक्ति हुई है। जब रमेश जायसवाल गैलहरी के निवासी थे भरतपुर गुरजनह में इनका कोई वास्ता नहीं था। वह के संबंधित दस्तावेज भी इसके नियुक्ति से परे है। इसके अलावा भी जहां का निवासी पति होगा पत्नी भी वही की निवासी होगी रमेश जयसवाल की पत्नी राजेश्वरी जयसवाल गैलहरी ग्राम पंचायत की निवासी है। आंगनवाड़ी पर कार्यकर्ता हैं ग्राम पंचायत आधार नियुक्ति होगी। एक साथ रमेश जयसवाल दो ग्राम पंचायतो के निवासी नहीं हो सकते होगे भी तो कानूनी कार्रवाई प्रक्रिया के भागीदार होंगे। जानकार गुरजनह तथा गैलहरी निवासी एवं शिक्षा विभाग पदस्थ ये बताते हैं की इनकी सर्विस बुक सेवा पुस्तिका की जांच की जाए तो बहोत से दस्तावेज इनकी नियुक्ति पर प्रश्नचिन्ह अंकित करते हुए अवैध नियुक्ति का रूप दिखाएंगे।

मनाई गई महाराणा प्रताप एवं छत्रसाल जयंती, निकाली गई विशाल शोभायात्रा

नवभारत न्यूज

नागौद 17 जून। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप एवं महाराज छत्रसाल जयंती समारोह का भव्य आयोजन बुधवार को प्रताप समिति एवं बरमै क्षत्रिय कल्याण सेवा समिति द्वारा बस स्टैंड प्रांगण में किया गया । समारोह में मुख्य अतिथि के के सिंह भवर साहब पूर्व विधायक गोपद बनास रहेए अध्यक्षता महाराज शिवेंद्र प्रताप सिंह किला ने किया ।

बत्तौर विशिष्ट अतिथि अजय सिंह पूर्व विधायक उमरिया एश्रीमती प्रतिभा यतेंद्र सिंह अध्यक्ष नगर परिषद एश्रीमती कामाक्षा कुमारी एपुष्पेंद्र प्रताप सिंहए डा धीरेंद्र सिंहए अभय सिंह रोली मंचासीन रहे। अतिथियों का स्वागत विनीत सिंह ने माल्यार्पण से किया आभार प्राचार्य ए पी सिंह ने व्यक्त किया सफल संचालन अरुण सिंह ने किया।

मुख्य अतिथि के के सिंह ने संबोधित करते हुए कहा मुगलों की फौज मुगलों का राज चारों तरफसे बढ़ रहा है सब तरफसे मेवाड़ पर दबाव था बड़े.बड़े महारथी अपनी घुटनों के बल आ गए थे मुगलों के सामने महाराणा प्रताप ने अधीनता स्वीकार नहीं की आज चिंतन करने की आवश्यकता है न्याय का विचारए गलत का विरोध करने की विशेषता होगी तो खोया साम्राज्य मिलता है ।

इन्हें किया गया सम्मानित - समारोह में प्रताप सम्मान से क्षेत्र के हायर सेकेंडरी परीक्षा परिणाम में सर्वोच्च अंक अर्जित करने वाले होनहार श्रेया अग्रवाल एरिचा पुरवार नागौद ए पलक यादव कुल्हरियां एआराध्या सिंह कचनार को प्रतिभा प्रताप सम्मान एश्रीमती प्रतिभा सिंह उमरी ए डा0 दीपेंद्र सिंह मुंबई एडॉ शिशुरून्देद्र सिंह बरहा एवं वरिष्ठ नागरिक प्रताप सम्मान से जीवेन्द्र सिंह दुबहिया एकृष्ण प्रताप सिंह छीदा एराजेंद्र सिंह गहरवार बारापत्थर को सम्मानित किया गया ।

निकाली गई विशाल शोभायात्रा-वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की विशाल शोभा यात्रा शौर्य गीत की धुन एवं बैंड बाजा की गूंज के साथ नगर के विभिन्न मार्गो से निकाली गई जिसमें बढ़ चढ़कर स्थानीय लोगों ने हिस्सा लिया शोभा यात्रा बस स्टैंड से प्रारंभ होकर सब्जी मंडी सिंहपुर चौराहा नगर परिषद कार्यालय मार्ग लक्ष्मीबाई मार्ग गांधी चौक जवाहर चौक होते हुए मुख्य कार्यक्रम स्थल पहुंची जगह.जगह लोगों द्वारा शोभायात्रा का पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया नगर के विभिन्न सामाजिक संगठनों ने शोभा यात्रा का स्वागत करते हुए जलपान की व्यवस्था की

इनकी रही उपस्थित - श्रीमती संतोष सिंह देवराज सिंह राघवेंद्र सिंह वीरेन्द्र सिंह छोटे विनोद सिंह एड राजभान सिंह विनीत सिंह मनोज सिंह एड देशराज सिंह अशोक सिंह अमर सिंह नरेंद्र सिंह आशीष प्रताप सिंह महेंद्र सिंह अनिल सिंह सुरेंद्र सिंह मुन्ना सिंह डी पी जायसवाल गोपाल सिंह सतेन्द्र सिंह सुरेश सिंह गौरेन्द सिंह जितेंद्र सिंह राकेश सिंह निशान्त सिंह अजय सिंह नीति राज सिंह अरुणेंद्र सिंह मृगेंद्र सिंह जयनारायण सिंह अजीत सिंह बालेन्दु सिंह नीरज सिंह शिवेंद्र सिंह अरुण सिंह गुरुवेंद्र सिंह पृथ्वीराज सिंह अनिरुद्ध सिंह मंटू अमन सिंह अंशुमान सिंह अत्तू सिंह दीपेंद्र सिंह वेदान्त सिंह रवि सिंह पुनीत सिंह सहित कई लोग उपस्थित रहे।

सिमको लाईम खदान और आरसीसीपीएल सढ़ेरा पर गंभीर आरोप

राजस्व को करोड़ों की चपत का दावा

नवभारत न्यूज

मैहर 17 जून। जिले में खनिज संपदा के दोहन को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो रहे हैं। क्षेत्र में संचालित सिमको लाईम खदान पिपरहट एवं आरसीसीपीएल सड़ेरा के बीच कथित मिलीभगत से अवैध खनन और खनिज परिवहन किए जाने के आरोप सामने आए हैं।

शिकायतकर्ताओं का आरोप है कि इस पूरे खेल से शासन को करो?ों रुपये के राजस्व का नुकसान हो रहा है, जबकि संबंधित विभाग कार्रवाई करने के बजाय मूकदर्शक बना हुआ है। आरोप है कि भटूरा क्षेत्र की खदानों से खनिज सामग्री का परिवहन कर उसे अन्य स्थानों के दस्तावेजों के आधार पर आरसीसीपीएल सढ़ेरा पहुंचाया जा रहा है। इस प्रक्रिया में खनिज नियमों और रॉयल्टी संबंधी प्रावधानों का उल्लंघन होने की आशंका जताई जा रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि क्षेत्र में लंबे समय से यह गतिविधियां जारी हैं, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी प्रभावी कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। शिकायतकर्ताओं ने विशेष रूप से सिमको खदान प्रबंधन और खनिज विभाग की भूमिका पर सवाल उठाते हुए निष्पक्ष जांच की मांग की है। उनका कहना है कि यदि पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए तो राजस्व हानि और अवैध खनन से जुड़े कई तथ्य सामने आ सकते हैं। अब देखना होगा कि जिला प्रशासन और खनिज विभाग इन गंभीर आरोपों को कितनी गंभीरता से लेते हैं तथा मामले में जांच और कार्रवाई की दिशा में क्या कदम उठाए जाते हैं।

भटूरा क्रेशर प्लांट की भी जांच होनी चाहिए -हाल ही में टास्क फोर्स समिति ने भाटिया-बरिया क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए पांच क्रेशरों को सीज कर दिया है। इस कार्रवाई के बाद अब लोगों की निगाहें भटूरा क्षेत्र पर टिक गई हैं, जहां कई क्रेशरों के संचालन को लेकर लंबे समय से सवाल उठते रहे हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि भटूरा क्षेत्र में संचालित कुछ क्रेशर सुरक्षा मानकों की अनदेखी कर कार्य कर रहे हैं। क्रेशरों के आसपास उड़ने वाली धूल, भारी वाहनों की आवाजाही और सुरक्षा व्यवस्थाओं के अभाव से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं पर्यावरणीय मानकों के पालन को लेकर भी लगातार शिकायतें सामने आती रही हैं। ग्रामीणों का कहना है कि जब भाटिया-बरिया क्षेत्र में नियमों के उल्लंघन पर टास्क फोर्स ने सख्त कार्रवाई की है, तो भटूरा क्षेत्र में भी निष्पक्ष जांच कर आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए।

श्री गैवी नाथ धर्मशाला बिरसिंहपुर में नि:शुल्क नेत्र 20 को

बिरसिंहपुर, । सतना के भटनवारा वाले अग्रवाल परिवार द्वारा निर्मित श्री गैवीनाथ जी धर्मशाला बिरसिंहपुर द्वारा 20 जून शनिवार को नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन प्रात: 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक किया गया है। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट जानकीकुंड चित्रकूट के सहयोग से समाजसेवी पुरुषोत्तम अग्रवाल भटनवारा वालों के मार्गदर्शन में धर्मशाला परिसर में संपन्न होगा ।नेत्र शिविर में बिरसिंहपुर क्षेत्र के अलावा दूर दराज ग्रामीण इलाके के लोग भी विगत 14 वर्षों से लाभ प्राप्त कर रहे हैं माह की प्रत्येक 20 तारीख को आयोजित होने वाले नेत्र शिविर में योग्य चिकित्सकों द्वारा आंखों की जांच करके चश्मे प्रदान किए जाएंगे एवं दवाइयों का वितरण भी होगा।

मझगवां में रीवा आनंद बिहार ट्रेन के स्टॉपेज की मांग लेकर ज्ञापन सौंपा

मांग पूरी नहीं हुई तो 1 जुलाई से करूंगा अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल :आशुतोष

आर.पी.एफ चौकी एवं आरक्षण केंद्र भी खोले जाने मंडल रेल प्रबंधक के नाम स्टेशन प्रबंधक को सौंपा ज्ञापन

नवभारत न्यूज

मझगवां 17 जून। आज मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव व उत्तर प्रदेश अखिल भारतीय किसान कांग्रेस बुंदेलखंड के प्रभारी आशुतोष द्विवेदी ने मंडल रेल प्रबंधक पश्चिम मध्य रेलवे के नाम स्टेशन प्रबंधक मझगवां को सौंपा चेतावनी भरा ज्ञापन जिसमें श्री द्विवेदी ने कहा की मझगवां स्टेशन मध्यप्रदेश का पहला व प्रभु श्री राम की कर्मभूमि तपोभूमि श्रीचित्रकूट धाम का प्रथम द्वार माना जाता है।

यहां से रोजाना हजारों यात्रियों का आना-जाना होता है लेकिन देश की राजधानी दिल्ली व संभाग रीवा जाने हेतु समुचित रेल सुविधा का कोई साधन नहीं है हमने क्षेत्रिय जनता के माध्यम से कई बार जन आंदोलन व धरना प्रदर्शन कर प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराया लेकिन हमारी मांग पर रेल प्रशासन द्वारा आज दिनांक तक कोई हल नहीं निकला वहीं पूर्व में मझगवां स्टेशन परिसर में रेल सुरक्षा बल की चौकी मौजूद थी जिसे बंद कर दिया गया है जिसके कारण अपराधिक गतिविधियां व रेल में चोरियों की घटनाएं लगातार बढ़ रही है जिससे यात्रियों व आमजन को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है तथा यहां के सैकड़ो लोगों को रोजाना रिजर्वेशन कराने के लिए ऑनलाइन की दुकान या 40 किलोमीटर दूर सतना जैतवारा व मानिकपुर तक जाना पड़ता है जिसके कारण आमजन को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण मजबूरन हमे अब अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल के लिए बाध्य होना पड़ रहा है की संपूर्ण जिम्मेदारी रेल प्रशासन की होगी जो हमारी भूख हड़ताल आगामी 1 जुलाई दिन बुधवार से अनिश्चितकालीन समय के लिए प्रारंभ होगी ज्ञापन सौंपने वालों में प्रमुख रूप से डॉ शमीम सिद्दीकी,चिंतन नामदेव,नयन तोमर,रिक्कू खान,पवन द्विवेदी,सचिन यादव,साहिल सिंह, छन्नन शाही,रवि जैसवाल,अनुज कुशवाहा सहित कई लोग मौजूद रहे ।

विवादित सचिव को रजरवार की जिम्मेदारी से आक्रोश

नवभारत न्यूज

कोटर 17 जून। रामपुर बघेलान जनपद क्षेत्र की ग्राम पंचायत रजरवार में सचिव विजय सिंह की पदस्थापना को लेकर ग्रामीणों में नाराजगी देखने को मिल रही है। ग्रामीणों का आरोप है कि पिछले तीन वर्षों में विजय सिंह का चार बार तबादला हो चुका है और वे पहले भी विभिन्न पंचायतों में विवादों के कारण चर्चा में रहे हैं।

ग्रामीणों का कहना है कि अकौना पंचायत में पदस्थ रहने के दौरान भी उनके कार्यों को लेकर कई शिकायतें सामने आई थीं। इसके बावजूद उन्हें रजरवार पंचायत की जिम्मेदारी सौंप दी गई, जिससे ग्रामीणों में असंतोष बढ़ गया है।

ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि राजनीतिक हस्तक्षेप से सचिव की पदस्थापना की गई है। हालांकि इस संबंध में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन और जनपद पंचायत से मांग की है कि पंचायत के विकास कार्यों और पारदर्शिता को ध्यान में रखते हुए सचिव विजय सिंह को तत्काल हटाकर निष्पक्ष एवं योग्य अधिकारी की नियुक्ति की जाए।

ग्रामीणों का कहना है कि यदि उनकी मांगों पर शीघ्र ध्यान नहीं दिया गया तो वे प्रशासन के समक्ष ज्ञापन सौंपकर आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

एक नजर में

जन कल्याण शिविर में हुआ समस्याओं का निराकरण

कोटर । आज नगरपरिषद कोटर में आयोजित तीन दिवसीय जन कल्याण शिविर के समापन अवसर पर समस्या निराकरण की समीक्षा की गई एवं कोटर नगरवासियों से समस्याओं को सुनकर निराकरण किया । इस अवसर पर प्रभारी सीएमओ आयुश सिंह , नगरपरिषद अध्यक्ष राजमणि सिंह, उपाध्यक्ष प्रभाकर तिवारी, सभापति बबलू गौतम, पार्षद पंकज कुशवाह, आंनद पाठक, पार्षद,केपी चौधरी, पार्षद कुंजी लाल, और कर्मचारी, दिवाकर तिवारी, सतीश साहू, अजय पाडेय , विवेक, अनीता कोहले, प्रीती पांडेय, उमेश गौतम, बिपिन तिवारी, रामदेव गोस्वामी, संतोष मिश्रा, गब्बर शुक्ला, शल्लू, दिनेश, राजेन्द्र, शैलेन्द्र कुशवाह, राहुल गौतम, अमन, रेशू, धर्मेंद्र सिंह, पिंटू शुक्ला, राममूर्ति कुशवाह, सुंदर लाल, और सभी कर्मचारी उपस्थित रहे।

ग्रामोदय से स्थानांतरित हुए कुमावत को दी गई विदाई

चित्रकूट । उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के सहायक कुलसचिव नीलकमल कुमावत का स्थानांतरण सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन किए जाने पर विश्वविद्यालय परिवार द्वारा उन्हें सम्मानपूर्वक विदाई दी गई। रजत जयंती सभागार में आयोजित विदाई एवं सम्मान समारोह कुलगुरु प्रो. आलोक चौबे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि श्री कुमावत सहायक कुलसचिव भर्ती परीक्षा-2022 के टॉपर रहे हैं। प्रशासनिक दायित्वों के साथ-साथ वे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी हेतु नियमित मार्गदर्शन भी प्रदान करते रहे तथा समय-समय पर विशेष कक्षाओं का संचालन कर विद्यार्थियों को लाभान्वित करते रहे हैं।

ग्राम मढ़ई के तालाब की मिट्टी का हो रहा दुरुपयोग

नवभारत न्यूज

मैहर 17 जून। मैहर जिले के ग्राम मढ़ई में सरपंच के खिलाफ ग्रामीणों ने गंभीर आरोप लगाए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि गांव के सौंदर्यीकरण कार्य के नाम पर तालाब से निकाली गई मिट्टी का उपयोग सार्वजनिक कार्यों में करने के बजाय सरपंच द्वारा अपने निजी उपयोग में किया जा रहा है।

ग्रामीणों के अनुसार तालाब की मिट्टी का इस्तेमाल गांव के विकास और सौंदर्यीकरण के लिए किया जाना था, लेकिन मिट्टी को निजी स्थानों पर ले जाए जाने की शिकायतें सामने आ रही हैं। यही नहीं अगर कोई ग्रामीण इस स्थान पर खड़ा हो जाता है तो विरोध करता है। इस मिसी को अगर कोई मांग ले तो मना कर देता है जब कि यह शासकीय जमीन की मिसी है।

इस मामले को लेकर गांव में जनआक्रोश बढ़ता जा रहा है और ग्रामीणों ने प्रशासन से निष्पक्ष जांच की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो संबंधित जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए ताकि सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग न हो सके।

सड़क के ऊपर बना दिया आरसीसी सड़क

आरसीसी सड़क निर्माण में अनिमिताएं, लोहे के टुकड़ों का हो रहा इस्तेमाल

नवभारत न्यूज

मझगवां 17 जून । जिले के मझगवां कस्बे में चल रहे आरसीसी सड़क निर्माण कार्य में कृष्णा इन्फ्रास्ट्रक्चर द्वारा खुलेआम भारी भ्रष्टाचार और अनियमितता बरतने का मामला सामने आया है। सड़क निर्माण में मानकों को ताक पर रखकर गुणवत्ता के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

तकनीकी नियमों के अनुसार आरसीसी सड़क के जोड़ों को मजबूती देने के लिए मानक डावल बार (Dowel Bars) का उपयोग किया जाना अनिवार्य है, लेकिन निर्माण कंपनी इसकी जगह लोहे के साधारण और कबाड़ नुमा टुकड़ों का इस्तेमाल धड़ल्ले से कर रही है। लगातार हो रहे इस घटिया किस्म के निर्माण कार्य के कारण भविष्य में सड़क के समय से पहले टूटने और धंसने का गंभीर खतरा पैदा हो गया है, जिससे स्थानीय जनता में भारी आक्रोश है हैरानी की बात यह है कि इस पूरे मामले में लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के जिम्मेदार अधिकारी पूरी तरह आंख मूंदकर बैठे हुए हैं। निर्माण स्थल पर लगातार हो रही इस बड़ी लापरवाही और धांधली के बावजूद पीडब्ल्यूडी विभाग ठेकेदार कंपनी के खिलाफ किसी भी प्रकार की दंडात्मक कार्यवाही करने से कतरा रहा है।

विभाग की यह रहस्यमयी चुप्पी सीधे तौर पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रही है, जिससे शासकीय राशि का सरेआम दुरुपयोग हो रहा है। स्थानीय नागरिकों ने वरिष्ठ अधिकारियों से इस घटिया निर्माण कार्य की तत्काल जांच कराने और दोषी कृष्णा इन्फ्रास्ट्रक्चर सहित लापरवाह अधिकारियों पर सख्त से सख्त कार्यवाही करने की मांग की है।